मनुष्य के बेहद निकट है चिम्पैंज़ी

प्रमोद भार्गव

दिखने में व आदतों में बंदर जैसा होने के बावजूद चिम्पैंज़ी की पूंछ नहीं होती। इसलिए इसे मनुष्य के ज़्यादा निकट माना जाता है। चिम्पैंज़ी के पैर लंबे होने के साथ-साथ टखनों से उभरे होते हैं।

बंदरों की चार प्रजातियां चिम्पैंज़ी, वनमानुष, गोरिल्ला और गिब्बन मानव जाति के बहुत करीब हैं। इनमें भी चिम्पैंज़ी अपनी बौद्धिक व शारीरिक विशिष्टताओं व क्षमताओं के कारण मनुष्य के एकदम करीब है।

चिम्पैंज़ी अफ्रीका के वर्षा बहुल वनों और उष्ण कटिबंधीय जंगलों में पाए जाते हैं। पूर्ण वयस्क चिम्पैंज़ी का वज़न 36 से 50 किलोग्राम तक होता है। नर चिम्पैंज़ी मादा की तुलना में अधिक भारी होता है। इसका पूरा शरीर काले घने बालों से ढंका होता है। बाल काले, लंबे और चमकीले होते हैं। इसका चेहरा लंबा और आगे की ओर निकले हुए जबड़े वाला होता है। चिम्पैंज़ी के होंठ बेहद पतले और लचीले होते हैं; चेहरे की तुलना में कान बड़े व लंबे होते हैं; कानों का रंग हल्का काला होता है; भुजाएं लंबी होती हैं; उंगलियों की तुलना में अंगूठा छोटा होता है; छाती चौड़ी होती है।

दिखने में व आदतों में बंदर जैसा होने के बावजूद चिम्पैंज़ी की पूंछ नहीं होती। इसलिए इसे मनुष्य के ज़्यादा निकट माना जाता है। चिम्पैंज़ी के पैर लंबे होने के साथ-साथ टखनों से उभरे होते हैं।

कहां-कहां

फुरसत में चिम्पैंज़ी जंगलों से निकलकर खुले मैदानों में आकर थोड़ी-थोड़ी देर के लिए समय गुज़ारते हैं। वे चारों हाथ-पैरों के बल चौपाए की तरह घूमते हैं, पेड़ों की शाखाओं पर चढ़ते-उतरते हैं और पत्तियां खाते हैं, शाखों को ये अपनी भुजाओं से मज़बूती से पकड़कर झूलते हैं।

चिम्पैंज़ी अफ्रीका के सभी जंगली क्षेत्रों और देशों में पाए जाते हैं। ज़ांबिया, गुयाना, सीअरा लीओन, लाइबेरिया, सूडान, युगांडा, रवांडा और तंज़ानिया के अलावा इन्हें दुनिया भर के चिड़ियाघरों में भी देखा जा सकता है। पर्वतों पर ये 700 से 1100 फीट की ऊंचाई तक खूब देखे गए हैं। चिम्पैंज़ी की *पैन ट्रोग्लोडाइट्स* प्रजाति ही सबसे बड़े भूक्षेत्र में फैली हुई है। इनके भिन्न-भिन्न आकार, रंग और